OM-19 - 2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 28/12/2020 11:29 AM Page 2

स्वमान में स्थित होने का मास

अव्यक्त मास आते ही प्रत्येक ब्रह्मावत्स के मन में अव्यक्त अनुभूति होने लगती है। ब्रह्मा बाबा की गहन तपस्या सामने आने लगती है। वो हमें प्रेरित करती है कि हम भी ऐसी तपस्या करें। ये भाव उमंग देने वाले लगते हैं। जिन्होंने उन्हें तपस्वी रूप में देखा, वे जानते हैं कि बाबा डीप साइलेंस में रहते थे। जो भी उनके पास जाता था वो अशरीरी हो जाता था। सवेरे बाबा स्वयं योग कराया करते थे और फिर आंगन में खड़े होकर सबको दृष्टि देते थे। वह दृश्य अलौकिकता सम्पन्न व अति आकर्षक होता था। कितनों ने ही बाबा को फरिश्ते रूप में देखा। हमें भी उन्हें देख उन्हें फॉलो करने का संकल्प आता है।

वैसे देखा जाए तो सभी से तपस्याएं नहीं होतीं, परन्तु ब्रह्मावत्स अच्छी तपस्या कर रहे हैं। जो गहन तपस्या करते हैं वे थोड़े ही 108 की माला के श्रेष्ठ तपस्वी रतन हैं। ऐसे रतन गुप्त होते हैं। सेवा के महारथियों का इस माला में स्थान नहीं होता। बहुत पवित्र, त्यागी और तपस्वी आत्मा ही इसकी अधिकारी होती है। लम्बा काल निर्विघ्न रहने वाली आत्मायें ही इसमें सुशोभित होंगी। जिन्होंने अभी तक भी काम, क्रोध, अहंकार पर विजय नहीं पाई, वे तो इस माला को सिमरण करने वाले ही बनेंगे।

ऐसे श्रेष्ठ संगमयुग की बेला में हर ब्रह्मा वत्स अमृतवेले विशेष रूप से गहन तपस्या और परमात्म मिलन के सुख की अनुभूति किये बिना नहीं रह पाते। अव्यक्त मास आने के पूर्व से ही सभी ऐसा उमंग भरें जैसे मुस्लिम लोग एक मास रोजा रखते हैं, हमें भी एक मास कुछ विशेष करना है। दिनचर्या को पुनः व्यवस्थित करें। ठीक समय पर सोकर अमृतवेले उठें। इस आनंद के लिए सोने से पूर्व पंद्रह-बीस मिनट अच्छे अभ्यास करके सोयें। एक मास के लिए कुछ व्रत ले लें, जो कर सकते हैं वे एक समय का भोजन छोड़ें या एक समय भोजन करके शेष फलाहार या कच्चा आहार लें। ऐसा करने से एक मास की साधना, पवित्रता की सिद्धि श्रेष्ठ बनाने में, योगी बनाने में अत्याधिक सहायक होगी। सप्ताह में हम दो बार मौन भी रखें तथा रोज़ सवेरे आठ बजे तक मौन रखें। ये व्रत, तपस्या में अति सहायक है। कम भोजन व कम बोलने से अमृतवेला बहुत सहज होगा।

व्यर्थ मुक्त मास

व्यर्थ बातों या समाचारों में रहने वाले कभी योगी नहीं बन सकते। व्यर्थ बातों के बाद जो सुख मिलता है, वो दुःखों का आह्वान करने वाला होता है। क्या हम सब ये संकल्प ले सकते हैं कि एक मास तक न हम व्यर्थ सुनेंगे, न व्यर्थ बोलेंगे? ऐसा करने से व्यर्थ संकल्प स्वतः ही समाप्त हो जायेंगे। कुछ लोग इसमें बोर भी हो सकते हैं, परंतु यदि सारा दिन कुछ अच्छी साधना करेंगे तो विशेष आत्मबल प्राप्त होगा। जिन्हें भी विजय रत्न बनने की इच्छा है, वे यह संकल्प करें। व्यर्थ में तो सारा संसार ही जी रहा है, व्यर्थ में तो हमने पच्चीसों वर्ष गंवायें, अब साधना करें।

अशरीरीपन व स्वमान की साधना करें

हमने बाबा में हमेशा ही देखा कि अशरीरीपन व स्वमान की साधना बहुत ही ज़्यादा थी। गहन अनुभव करें कि मैं आत्मा इस देह से न्यारी हूँ... मैं स्वराज्य अधिकारी हूँ... इस देह में अवतरित हूँ। अपना चमकता हुआ तेजस्वी स्वरूप देखें व अनुभव करें। हम सिर्फ बिन्दी ही नहीं... अति प्रकाशमान... अति तेजस्वी हैं। ये अभ्यास अमृतवेले भी हो, व सारे दिन में कम से कम दस-पंद्रह बार अवश्य करें। मैं फरिश्ता हूँ... मुझे देवता बनना है। यह फरिश्ता सो देवता का अभ्यास पाँच-पाँच बार सवेरे-शाम करें। इसमें महसूस हो कि मैं फरिश्ता सूक्ष्मवतन में हूँ... वहाँ अनेक फरिश्ते हैं... फिर मैं देवता देवलोक में हूँ...। अभ्यास करने से वो दोनों फीलिंग स्पष्ट होने लगेगी। अशरीरीपन के अभ्यास के साथ ही स्वमान हमारे मूल-संस्कारों, शक्तियों व गुणों को जागृत करता है। स्वमान पर यदि चिंतन भी हो तो सोने पे सुहागा। चिंतन करने से अंतर्मन स्वीकार करेगा कि मैं ये ही हूँ।

हमारी दुआएं दूसरों के चित्त को शांत करती हैं। हमारी जड़-मूर्तियां भी दूसरों को शांति दे रही हैं। हमारी शुभ-भावनाएं अनेकों को सहारा देती हैं। शुभ-भावना मंसा सेवा का नैचुरल स्वरूप है। यदि हमें कोई अशुभ-भावनाएं भी देते हैं तो उन्हें दस बार शुभ-भावनायें दें तो आपसे पॉज़िटिव एनर्जी उन्हें जायेगी और उनकी नेगेटिव एनर्जी आप तक नहीं आयेगी। क्षमा करना शक्तिशाली आत्मा की पहचान है।

इस तरह जनवरी मास में हम कुछ बातें साधना के रूप में ले लेते हैं तो अवश्य ही हमारा जो शुभ-संकल्प है वो साकार होगा और हम भी ब्रह्मा बाबा की तरह तपस्वी व योगी बन सकेंगे। करेंगे ऐसा सभी? ऐसे मौके को अलबेलेपन के वश होकर छोड़ न दें। बस... दृढ़ता के साथ हमें करना ही है, इस अवसर को श्रेष्ठ स्वरूप के साथ आकार देना ही है।

असंभव को संभव कर दिखाया बाबा ने

ब्रह्मा बाबा को शिव बाबा ने टच किया और ब्रह्मा बाबा ने उस संकल्प में थोड़ा भी संशय नहीं लाया। क्या होगा, कैसे होगा.....

बाबा को हम सबने दिल से कहा कि बाबा, हमें आप जैसा बनना ही है। बनना ही है- यही आवाज़ है हम सभी की। बनेंगे, देखेंगे, सोचेंगे, पता नहीं बन सकेंगे या नहीं बन सकेंगे, ऐसा तो नहीं? जिसमें दृढ़ता सफलता की चाबी है। बाबा ने हम सबको ऐसी चाबी दी है, भले उसे जादू की चाबी कहो। अगर दृढ़ता है तो सफलता है ही।

साक्षात्कारमूर्त तब बनेंगे जब साक्षात् बाप समान बनेंगे। तो आप देखो, बाबा की सबसे पहली-पहली विशेषता क्या रही? ब्रह्मा बाबा को शिव बाबा ने टच किया और ब्रह्मा बाबा ने उस संकल्प में थोड़ा भी संशय नहीं लाया। क्या होगा, कैसे होगा, मैं सबकुछ छोड़ तो दूं लेकिन आगे स्थापना कर सकूंगा या नहीं कर सकूंगा? ये उनके लिए नयी बात थी ना! दुनिया में द्वापर से लेकर अभी कलियुग तक जो बात किसी ने नहीं कही थी कि प्रवृत्ति में रहकर भी आप निर्विकारी रह सकते हैं, पवित्र रह सकते हैं। अभी तक भी इतने साधु, सन्त, महात्मा, मंडलेश्वर जो भी हैं, वे भी विश्वास नहीं करते हैं कि आग और कपास साथ में हों और आग नहीं लगे, ये हो ही नहीं सकता- वे ये शब्द बोलते हैं। लेकिन बाबा के प्रवृत्ति में रहने वाले बच्चे बोलते हैं कि आग और कपास साथ हैं तो भी अपवित्रता की आग नहीं लग सकती। शुरू-शुरू में सिंध-हैदराबाद में माताओं-बहनों के पवित्रता अपनाने के कारण बहुत विघ्न पड़े। बाबा को पंचायत में बुलाया गया। पंचों ने बाबा से कहा कि आप इन माताओं और कन्याओं से कहो कि पवित्र न रहें। हमारे आगे आप वायदा करो। बाबा ने कहा कि मैं यह वायदा नहीं कर सकता और इन्हें भी कह नहीं सकता क्योंकि शिव बाबा ने मुझे यही आज्ञा दी है कि तुमको पवित्र बनकर, पवित्र दुनिया की स्थापना करनी है। इस ईश्वरीय ज्ञान का फाउण्डेशन ही यही है और मैं कहूँ कि पवित्र नहीं बनो तो पवित्र दुनिया स्थापन होगी कैसे! मैं यह नहीं कह सकता हूँ। मुझे शिव बाबा का डायरेक्शन है, मैं उसको टाल नहीं सकता। ऐसा निश्चय है! इतनी हिम्मत चाहिए ना! बाबा को ज़रा भी संशय नहीं आया। बाबा इतना बड़ा जौहरी था। जब सबकुछ यज्ञ में समर्पित कर दिया तो कभी सोचा कि मेरे परिवार का क्या होगा! मेरी प्रतिष्ठा का क्या होगा! मेरा इतना बड़ा परिवार है, सबकुछ समर्पण कर दिया तो वे भूखे तो नहीं मरेंगे! ऐसा कुछ भी नहीं सोचा। उनमें यही लगन थी कि बाबा जो कहता है मुझे वैसा ही करना है। इसको कहा जाता है निश्चय। आपके आगे एग्ज़ाम्पल है। आज इतना बड़ा पवित्र प्रवृत्ति वाला ब्राह्मण परिवार है। लेकिन उस समय ब्रह्मा बाबा अकेला था, उनके आगे कोई दृष्टांत, एग्ज़ाम्पल नहीं था। नयी बात थी। इतनी नयी बात कि लोग असम्भव मानते थे। उस असम्भव को बाबा ने सम्भव बनाकर दिखाया। संकल्प मात्र में भी, स्वप्न मात्र में भी बाबा को संशय नहीं आया। इसको कहते हैं बाप समान। बाप समान बनना माना साक्षात् बाबा बनना। तभी हम साक्षात्कारमूर्त बन सकते हैं।

पहली बार बाबा ने कहा... रुक जाओ!

18 जनवरी से पहले मैं गामदेवी मुम्बई सेवाकेन्द्र में रहती थी। बाबा से मिलने मैं पार्टी लेकर मधुबन आयी। उस समय दीदी इलाहाबाद के कुम्भ मेले में गयी थी। जब मैं यहाँ(मधुबन) आयी तो बाबा ने कहा, बच्ची, तुम अभी आयी हो, दो-चार दिन रुक जाना। बाबा कभी भी मुझे दो दिन से ज़्यादा नहीं रहने देते थे। कभी मैं कहती थी, बाबा, मैं चार-पाँच दिन रहूंगी, तो बाबा कहते थे, क्यों, कोई सेवा नहीं है क्या? यहाँ से बादल भरके जाओ और वहाँ बरसो। जब बाबा ने खुद कहा कि दो-चार दिन रह जाओ तो मैंने कहा, जी बाबा। बाबा ने कहा, बच्ची, पार्टी को जाने दो, दीदी भी नहीं है, थोड़े दिन रह जाओ। 18 जनवरी की सुबह बाबा ने मुरली नहीं चलायी। सवेरे से ही बाबा का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। यज्ञ के इतिहास में बाबा के तपस्वी जीवन में केवल यह एक ही दिन था जब बाबा ने प्रातः की मुरली नहीं चलायी थी परन्तु वे उस दिन सर्वोच्च स्थिति में स्थित थे। जब हमने डॉक्टर को बुलाने के लिए कहा तो बाबा ने उसी मस्ती में कहा था कि "बच्ची, डॉक्टर क्या करेगा, मैं तो सुप्रीम सर्जन से बातें कर रहा हूँ।" उस दिन बाबा ने कहा, लाओ, आज बच्चों को पत्र लिखूँ। बाबा के हाथ में थी वह लाल कलम, जिसके सुन्दर अक्षर सभी के दिलों को खींच लेते थे। बाबा ने सभी पत्रों के उत्तर दिये। बाबा ने लिखा था, "बच्चे, सदा एक मत होकर चलना है, एक की याद में रहना है और सदा शक्तियों को आगे रखना है तब ही सेवा में सफलता होगी।" ये अंतिम पत्र कई बच्चों ने अपने दिल में छुपा कर रख लिये। दिन में बाबा अंगुली पकड़कर मुझे मधुबन का आंगन घुमाते रहे। उस समय ट्रेनिंग सेंटर बन रहा था, बाबा अंगुली पकड़कर दिखा रहे थे। दिन का भोजन कर बाबा ने विश्राम भी किया। शाम के समय कोई पार्टी आयी थी, बाबा उनसे भी मिले। फिर उस दिन बाबा ने कहा, आज रात का भोजन थोड़ा जल्दी कर देते हैं। उस दिन बाबा ने रात 7:30 पर भोजन किया। वैसे तो रोज़ 8:30 बजे भोजन करते थे। भोजन के बाद बाबा रात्रि क्लास में भी आये। क्लास में बाबा ने शिक्षाओं भरी मधुर मुरली सुनायी। उस दिन बाबा आठ बजे ही क्लास में आये और साकार रूप के वे अंतिम महावाक्य तो दिल में समाने जैसे हैं। बाबा ने कहा था - "बच्चे, सिमर सिमर सुख पाओ, कलह क्लेश मिटें सब तन के, जीवनमुक्ति पाओ।" "बच्चे, निंदा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोई। तुम्हें किसी की निन्दा नहीं करनी और किसी से वैर विरोध भी नहीं रखना।" इस प्रकार, याद की यात्रा पर बल देते हुए यज्ञ पिता बाबा खड़े होकर गेट की ओर चले और फिर गेट पर रुक गये और बोले, "बच्चे, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी बनो। जैसे बेहद का बाप सम्पूर्ण व सदा निर्विकारी है, सदा निराकार है, निरहंकारी है वैसे ही बच्चों को भी बनना है।" फिर उस अंतिम घड़ी के पूर्व बाबा के मुख से ये शब्द निकले, "अच्छा बच्चे, विदाई।" ये शब्द बाबा ने केवल उसी ही रात बोले थे, जब बाबा साकार तन से बच्चों से सदा के लिए विदा होने जा रहे थे। वरना बाबा, सदा बच्चों को रात्रि को गुड नाइट ही कहा करते थे। मुरली सुनाने के बाद बाबा अपने कमरे में गये। हम चार बहनें बाबा के साथ गईं। तब बाबा के चेहरे पर सम्पूर्ण शांति व दिव्यता झलक रही थी। बाबा चारपाई पर नीचे पैर करके बैठे थे, तब उस अंतिम घड़ी में, मेरा हाथ बाबा के हाथ में था। बाबा मुझे दृष्टि दे रहे थे। दृष्टि देते ही बाबा शरीर से उड़ चले और मेरे हाथ में बाबा का हाथ ढ़ीला पड़ गया। मुझे ऐसा आभास हुआ था कि बाबा मुझे हाथ में हाथ देकर अपनी सम्पूर्ण शक्तियां व उत्तरदायित्व दे गये। और इसीलिए बाबा ने मुझे पहली बार मधुबन में रुकने को कहा था।

बाबा से जो पाया वो सब दूसरों को दिया

मैंने देखा कि वे एक सच्चे पिता थे। उनसे सभी को पितापन का आभास होता था। हम उनके द्वारा ईश्वरीय ज्ञान सुनकर उत्पन्न हुए, इसलिए हम उनकी मुख सन्तान कहलाये। उनके अव्यक्त होने के बाद जो उनके बच्चे बने, उनके लिए बाबा प्रजापिता है और जो उन्हें अन्त में पहचानेंगे, वे उन्हें जगतपिता कहेंगे। हमें महसूस होता है कि थोड़े ही समय में समस्त विश्व उन्हें जगतपिता मानेगा अपने अनुभवों के आधार पर। मुझे उनसे बार-बार प्रेरणाएं मिली हैं कि जैसी भासना हमें बाबा ने दी वैसे ही भासना हम दूसरों को दें। जैसे बाबा ने हमें पालकर बड़ा किया, वैसे ही हम दूसरों को पालना देकर बड़ा करें। भले ही हम जगत-पिता तो नहीं हैं, परन्तु हैं तो उन्हें फॉलो करने वाले उनके ही महान बच्चे...। दूसरी मुख्य बात मैंने बाबा में देखी कि बाबा में तनिक भी कर्तापन का भान नहीं था। बाबा सदा कहते थे कि सबकुछ शिव बाबा ही करता है या बच्चे करते हैं। अपने को सदा ही छुपाए रखना व बच्चों को स्वमान देना- यही मानवता हमने बाबा से सीखी। मुझे इस बात का सदा ख्याल रहता है कि कर्तापन का तनिक भी भान न आये। हमें बाबा ने सिखाया कि शिव बाबा से ईमानदार कैसे रहना चाहिए। सम्पूर्ण सम्पत्ति का चाहे वह उनकी स्वयं की थी या अन्य आत्माओं ने यज्ञ में दी थी वे उसके सम्पूर्ण ट्रस्टी थे। यही विशेषता उन्होंने हमें सिखाई। इसी ईमानदारी से हमारा सारा व्यवहार सरल हो गया, हम भगवान के समीप आ गये और हमारी अधीनता भी समाप्त हो गई।

मैंने ज्ञान मंथन करने की मुख्य विशेषता बाबा से सीखी। शिवबाबा के ज्ञान पर मंथन कैसे करें ताकि अपनी बुद्धि का ज़रा भी अहंकार न रहे... यह बात बाबा में प्रत्यक्ष देखी। बाबा ने हमें सिखाया कि आपस में अलौकिक वातावरण कैसा होता है, अलौकिक भाषा कैसी होती है तथा अलौकिक सम्बन्ध कैसा होता है। जब भी बाबा के पास जाते- ये तीनों बातें स्पष्ट देखने में आती थीं। बाबा के पास किसी भी तरह की लौकिकता नज़र नहीं आती थी। वास्तव में लौकिकता से दिव्यता मिस हो जाती है। बाबा ने हमें सिखाया कि हम संसार में कैसे रहें, शिवबाबा से कैसे रहें, अपने से कैसे रहें, अपने को कैसे रखे और अपना स्वमान कैसे रखें। रूहानियत भी हो... नारायणी नशा भी हो। बाबा को सदा ही हमने पूरी अथॉरिटी में देखा। परिस्थितियों में बाबा कहते थे कि तुम डरो नहीं। सब बाबा के ही बच्चे हैं। इस प्रकार बाबा ने हमें अति निर्भय बना दिया। बाबा अपनी एनर्जी वेस्ट नहीं होने देते थे। सदा यही संकल्प रखते थे कि मेरी एनर्जी सभी को मिलती रहे। बाबा अन्दर ही अन्दर शिवबाबा से एनर्जी खींचते रहते थे। सेवा के लिए बाबा ने हमें बहुत कुछ सिखाया। समानता में रहने का बीज डाल दिया, हिम्मत से भरपूर कर दिया, आध्यात्मिक शक्ति भर दी जो कि आज विश्व सेवा में काम आ रही है। आज दुनिया में अनेक आत्माएं सत्य की प्यासी हैं, हमें रहता है कि इन्हें कुछ दें। बाबा ने कूट-कूट कर भर दिया है कि सेवा में अनासक्त वृत्ति ही सफलता का आधार है। मुझे कभी फल देखने की इच्छा नहीं होती कि हमने जो सेवा की उसका फल क्या निकला। बाबा ने सिखा दिया कि डाला हुआ बीज कभी निष्फल नहीं जाता। भगवान के दर पर कोई भी अभिमान नहीं रख सकता, बाबा ने अपनी निर्मानता से हमें यही सिखाया। और अब स्मृति दिवस ज्यों-ज्यों समीप आता है, बाबा का सम्पूर्ण चित्र सामने स्पष्ट हो जाता है, उनका प्यार श्रेष्ठ प्रेरणाएं देता रहता है। ऐसे सच्चे पिता पर ये मन कुर्बान है।